सिद्धयोग साधना का शुभारम्भ

डेविड कैट्ज़ द्वारा वार्ता

नववर्ष दिवस २०२३ के अवसर पर, मधुर सरप्राइज़ में इस वर्ष के लिए गुरुमाई चिद्विलासानन्द का नववर्ष-सन्देश प्राप्त करने हेतु सिद्धयोगीजन श्री मुक्तानन्द आश्रम में एकत्र हुए। इस सत्संग में श्री डेविड कैट्ज़ ने एक वार्ता दी जो यहाँ दी जा रही है :

नूतन वर्षाभिनन्दन!

आप सभी को, जो अनन्तता को नापने में प्रवीण हैं, नया साल मुबारक हो!

और अब मैं समस्त सृष्टि को नववर्ष की शुभकामनाएँ देना चाहता हूँ जो समय से बँधी हुई नहीं है। सातों महाद्वीपों को नया साल मुबारक। ऊपर आकाश को नया साल मुबारक। नीचे धरती को नया साल मुबारक। सभी तत्त्वों को नया साल मुबारक।
सभी दसों दिशाओं को नया साल मुबारक।

उन सभी को नया साल मुबारक जिन्हें नए साल के *नएपन* की *खुशी* मनाने का विशेषाधिकार प्राप्त है! उन सभी को नया साल मुबारक जो संघर्ष करते रहे हैं—क्योंकि आप नए साल के नएपन की खुशी पाने व उसकी अनुभूति करने के हक़दार हैं!

मैं आपको एक बार फिर नववर्ष की शुभकामनाएँ, उसी प्रकार देना चाहता हूँ, जैसे कि हम सिद्धयोग पथ पर देते हैं, यह कहते हुए, "सद्गुरुनाथ महाराज की जय!"

आज सुबह हम सब वर्ष २०२३ के लिए गुरुमाई चिद्विलासानन्द का नववर्ष-सन्देश प्राप्त करने हेतु सिद्धयोग वैश्विक हॉल में एकत्र हुए हैं। हम श्रीगुरुमाई का मार्गदर्शन पाने हेतु यहाँ हैं। हम में से वे जो सिद्धयोग पथ पर बहुत वर्षों से हैं, उनके लिए यह मार्गदर्शन है कि हम अपनी सिद्धयोग साधना किस प्रकार करते रहें। और नए साधकों के लिए यह मार्गदर्शन है कि वे इस पथ पर चलना कैसे आरम्भ करें।

हम मधुर सरप्राइज़ २०२३ में भाग ले रहे हैं! जय गुरुमाई!

मेरा नाम है, डेविड कैट्ज़ और यह मेरे लिए बड़े सम्मान व हर्ष की बात है कि मैं श्रीगुरुमाई के साथ हो रहे आज के इस सत्संग में, मेज़बान व एक वक्ता के रूप में सेवा कर रहा हूँ।

आपको जो प्राप्त होने जा रहा है, वह आपको वास्तव में मिले इसके पहले, उसके महत्त्व के बारे में कुछ ज्ञान होने से हमेशा मदद मिलती है। अतः, आज अपनी वार्ता में, मैं आपको बताऊँगा कि मैंने अपनी सिद्धयोग साधना से क्या सीखा है। मैं सिद्धयोग पथ पर उन्तालीस वर्षों से हूँ जिससे मेरा परिचय कराया था मेरी अत्यन्त सुन्दर व प्रतिभाशालिनी पत्नी, कश्मीरी ने जो कि इन अनेक वर्षों में मेरी साधना-सहचरी भी रही हैं। अपनी वर्षों की साधना से मुझे जो ज्ञान प्राप्त हुआ है, उससे मुझे यह जानने में बहुत लाभ हुआ है कि वर्षभर के लिए दिए गए श्रीगुरुमाई के सन्देशों को कैसे ग्रहण करना चाहिए व कैसे उनका अभ्यास करना चाहिए।

संसारभर में—सभी महाद्वीपों, संस्कृतियों व परम्पराओं में—लोग बड़ी प्रत्याशा से, आदर से व उत्सव मनाते हुए नए साल के प्रथम दिवस की ओर बढ़ते हैं। नई शुरुआत करने, अपने दृष्टिकोण को फिर से ठीक करने और नए उद्देश्य व उत्साह के साथ भविष्य की ओर आगे बढ़ने के एक अवसर के रूप में नए साल के प्रथम दिवस को अपनाया जाता है।

सिद्धयोग पथ पर, पहली जनवरी वास्तव में एक अद्‌भुत व शक्तिपूरित समय होता है। यह हमारा परम सौभाग्य है कि इस दिन हमें नववर्ष के लिए श्रीगुरुमाई का सन्देश प्राप्त होता है। सार्वभौमिक सिद्धयोग संघम् में, यह हम सभी को सामूहिक रूप से अपने आध्यात्मिक विकास में प्रगति करने का एक सुअवसर प्रदान करता है। हमारे सामूहिक संकल्प व गहन ललक में ज़बरदस्त सामर्थ्य होती है कि हम साधना में एक-साथ सच्ची प्रगति कर सकें।

नववर्ष के लिए सन्देश देने की यह परम्परा श्रीगुरुमाई ने वर्ष १९९१ में आरम्भ की थी। यह गुरुमाई जी की करुणा की उत्कृष्टतम अभिव्यक्ति है और यह सिद्धयोग पथ का एक स्तम्भ बन गई है।

आइए इस पर कुछ और अन्वेषण करते हैं। और हम यह पूछते हुए शुरू करते हैं, "सिद्धयोग पथ क्या है?"

सिद्धयोग पथ परमात्मा को जानने की हमारी ललक के प्रति श्रीगुरु द्वारा दिया गया उत्तर है। श्रीगुरु द्वारा हमें दिखाया गया मार्ग अनुशासन, अध्ययन व चिन्तन का मार्ग है। और, क्योंकि हमें स्वयं श्रीगुरु का सान्निध्य प्राप्त है, अतः यह श्रद्धा-भक्ति व सेवा का मार्ग है। श्रीगुरु की सिखावनियों को सही अर्थों में सँजोकर रखने के लिए यह महत्त्वपूर्ण है कि शिष्य होने के नाते हम इन सिखावनियों का अभ्यास करें, इन्हें आत्मसात् करें और इन पर अमल करें।

गुरु-शिष्य सम्बन्ध के माध्यम से घटित होने वाली इस अद्‌भुत कीमियागरी का आरम्भ होता है, शक्तिपात दीक्षा के साथ। शक्तिपात दीक्षा अर्थात् गुरुकृपा के सीधे संचारण द्वारा शिष्य में कुण्डलिनी शक्ति की जागृति। यह दीक्षा परमोच्च होती है।

क्यों? क्योंकि जाग्रत कुण्डलिनी की शक्ति हमारे उन प्रयत्नों को सम्बल देती है जो हम मन और इन्द्रियों के शुद्धिकरण हेतु व परमात्मा से एकात्मता की अनुभूति हेतु करते हैं। शक्तिपात दीक्षा केवल सिद्धगुरु प्रदान कर सकते हैं, अर्थात् वे सद्‌गुरु जो परम आत्मा की अनुभूति में शाश्वत रूप से अवस्थित हैं।

शक्तिपात के पश्चात्, श्रीगुरु जाग्रत कुण्डलिनी के विकास में निरन्तर मार्गदर्शन देते रहते हैं। यह मार्गदर्शन सिद्धयोग पथ की सिखावनियों व अभ्यासों द्वारा दिया जाता है और इसी सन्दर्भ में हम श्रीगुरुमाई द्वारा वर्ष के लिए दिए गए सन्देश के महत्त्व को समझ सकते हैं।

जैसा कि श्रीगुरुमाई कहती हैं :

> मैं चाहती हूँ कि जब तुम सन्देश को सुनो
> तो यह जान लो कि यह सम्पूर्ण वर्ष के लिए एक दीक्षा है।
> इस सन्देश की शक्ति तुम्हारी समझ को और तुम्हारे प्रयत्नों को कृपा से अनुप्राणित कर देगी।[१]

मैं चाहता हूँ कि आप इस पर कुछ क्षण चिन्तन-मनन करें।

श्रीगुरुमाई की इस बात से मुझे बहुत खुशी हुई व प्रेरणा मिली : कि उनका सन्देश पूरे साल के लिए एक दीक्षा है।

आइए, अब हम 'दीक्षा' शब्द को और ध्यानपूर्वक देखते हैं।

'दीक्षा' शब्द के लिए अंग्रेज़ी शब्द है initiation [इनीशिएशन] और यह लैटिन भाषा के मूल शब्द initiatus [इनीशियाटस] से आया है जिसका अर्थ है, 'किसी चीज़ की पहल करने या शुरू करने का कार्य या प्रक्रिया'। अनेक आध्यात्मिक परम्पराओं में दीक्षा प्राप्ति को एक प्रकार का शुद्धिकरण समझा जाता है। और किसी चीज़ को शुद्ध करने का अर्थ है, उसे पवित्र करना या पवित्र घोषित करना।

इन अन्तर्दृष्टियों के साथ, हम उस चीज़ के महत्त्व को और बेहतर रूप से समझ सकते हैं जिसे आज हम श्रीगुरुमाई से प्राप्त करने जा रहे हैं। और यह सिद्धयोग साधना के पथ पर एक पवित्र नवीन आरम्भ से कम नहीं है जो गुरुकृपा से अनुप्राणित है।

कभी-कभी मैं सोचता हूँ : गुरुमाई जी ने पूरे वर्ष के लिए सन्देश देना क्यों चुना? गुरुमाई जी तो हर समय सिखावनियाँ प्रदान करती हैं। जब गुरुमाई जी व्यक्तिगत रूप में हमसे बात करती हैं, तब वे अपनी सिखावनियाँ प्रदान कर रही होती हैं। जब गुरुमाई जी लिखती हैं, तब वे अपनी सिखावनियाँ प्रदान कर रही होती हैं। जब गुरुमाई जी प्रवचन देती हैं, जब गुरुमाई जी हमारे सपनों में आती हैं, जब गुरुमाई जी हमारे हृदय में हमसे बात करती हैं, उदाहरण के लिए जब हम श्रीगुरुगीता का पाठ कर रहे होते हैं, या जब हम भूमिगत मार्ग पर चल रहे होते हैं—इन सभी अवसरों पर गुरुमाई जी अपनी सिखावनियाँ प्रदान कर रही होती हैं। श्रीगुरुमाई ने पूरी-पूरी पुस्तकें लिखी हैं, उन्होंने अनेक काव्य-संग्रहों की रचना की है जिनमें वे अपनी सिखावनियाँ प्रदान कर रही हैं। यदि हम उन सिखावनियों से सीखना चाहते हैं, यदि हम उन्हें अपने ज्ञानकोश का व जीवन के अपने अनुभव का भाग बनाना चाहते हैं, यदि हम उन्हें अपनी साधना का अभिन्न अंग बनाना चाहते हैं तो वे सिखावनियाँ हमारे लिए सुलभ हैं।

जब यही बात है तो ऐसा *क्यों है* कि श्रीगुरुमाई ने पूरे वर्ष के लिए एक सन्देश प्रदान किया है?

एक विचार मेरे मन में आता है : ऐसा बस इसलिए होगा . . . क्योंकि गुरुमाई जी *सच में* हमें अच्छी तरह जानती हैं।

जब किसी चीज़ को एक विशेष स्थान दिया जाता है जैसे कि नववर्ष-सन्देश को दिया जाता है—जब उसका उद्देश्य और महत्त्व हमें समझाया जाता है तो हम उसका पालन करने हेतु अधिक तत्परता से प्रयत्न करते हैं। हमें जो मिल रहा है, हम उसकी क़द्र करने का, उसका आदर करने का तरीक़ा खोज लेते हैं। हमें अपने अन्दर 'वचनबद्धता' का सद्गुण भी दिखाई देता है—आज्ञा का पालन करने की वचनबद्धता, नववर्ष-सन्देश को आत्मसात् करने की वचनबद्धता।

और इस विषय पर कि गुरुमाई जी हमें अच्छी तरह जानती हैं, एक और बात जिस पर मैंने विचार किया है, वह आपको बताना चाहता हूँ कि क्यों गुरुमाई जी हर वर्ष एक सन्देश प्रदान करती हैं। अनेक लोग हैं जिनसे मैंने व्यक्तिगत तौर पर बात की है और अन्य अनेक लोग जिन्होंने सिद्धयोग पथ की वेबसाइट पर बताया है, उन सब लोगों ने कहा कि गुरुमाई जी का सन्देश उन्हें बिलकुल सही समय पर प्राप्त हुआ है। गुरुमाई जी द्वारा कहे गए वे शब्द *बिलकुल* वही थे जिन्हें सुनने की उन्हें ज़रूरत थी।

साथ ही, मैं इस बात को स्पष्ट करना चाहता हूँ कि श्रीगुरुमाई का नववर्ष-सन्देश समयातीत है। प्रत्येक सन्देश एक मन्त्र है, प्रत्येक सन्देश एक सूत्र है—इसमें निहित प्रज्ञान ऐसा अनन्त है कि आप युगों-युगों तक इसके अर्थ का अन्वेषण कर सकते हैं।

अब, गुरुमाई जी कब और कैसे यह निर्णय लेती हैं कि किसी विशिष्ट वर्ष में उन्हें वही विशिष्ट सन्देश प्रदान करना है—मुझे नहीं पता! इसे न जानने में ही मुझे बड़ा आनन्द महसूस होता है।

जो मैं कह *सकता* हूँ वह यह है कि श्रीगुरुमाई के सन्देश का हमारे जीवन पर जो प्रभाव होता है, वह अगाध है, उसे मापा नहीं जा सकता। वह साधकों के हृदय में प्रवेश करता है, चाहे उन्हें किसी भी धर्म में आस्था हो, चाहे वे किसी भी संस्कृति या आयु के हों। श्रीगुरुमाई का सन्देश एक सार्वभौमिक उपदेश है।

अब मैं आपके साथ एक साधिका का अनुभव बाँटना चाहता हूँ, उसे सुनें; उनका यह अनुभव सन् २०१४ के लिए गुरुमाई जी के सन्देश से जुड़ा है। ये महिला लगभग साठ वर्षों से कैथलिक चर्च की डोमिनिकन परम्परा की नन [ईसाई तपस्विनी] थीं। सन् २०१५ के अगस्त माह में वे श्री मुक्तानन्द आश्रम आई थीं। श्री मुक्तानन्द आश्रम आकर गुरुमाई जी के दर्शन पाकर वे कृतज्ञता से इतनी भर गईं कि वे केवल गुरुमाई जी द्वारा दिए गए अपने पसन्दीदा सन्देश के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करके ही अपनी कृतज्ञता की भावना को व्यक्त कर पाईं। उन्होंने कहा :

> आप कैसे उसके विषय में बात करें जो आपके अन्दर इतना मूल्यवान है? मुझे गुरुमाई जी का यह सन्देश बेहद पसन्द है—"निःशब्द नाद, निरंजन शान्ति के मण्डल में उदय और विलय होता है।" जब मैंने यह पढ़ा तो मैंने उसे एक बोर्ड पर लिखकर कॉन्वेन्ट [ईसाई मठ] के एक प्रवेश-द्वार पर लटका दिया ताकि हाईस्कूल के बच्चे उसे देख सकें।
>
> हममें से हरेक के अन्तर की गहराई में कुछ है। कुछ तो है—हम उसे नीलबिन्दु कह सकते हैं, या परमात्मा की उपस्थिति कह सकते हैं। गुरुमाई जी के उस सन्देश ने मुझे अपने अन्दर स्थित मौन के एक गहन स्थान तक छू लिया। आप जानना चाहते हैं परमात्मा क्या है? वह आप है, वह मैं हूँ, वह प्रकृति में भगवान की उपस्थिति है। गुरुमाई जी, आज आपने मुझे जो दिया है उसके लिए मैं आपको जितना भी धन्यवाद दूँ, कम है।

एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन के एक स्टाफ़ सदस्य जो इन नन की मित्र हैं, उनसे मैंने सुना कि वे लगातार बताती रही हैं कि वर्ष २०१४ के लिए गुरुमाई जी के सन्देश का उन पर कितना गहरा प्रभाव हुआ है। उस सन्देश ने उनके अन्दर उनके अपने प्रभु, ईसा मसीह की उपस्थिति को जगा दिया है।

इन नन को जो अनुभव हुआ—और यह विचार कि श्रीगुरु की सिखावनियाँ, और विशेषरूप से श्रीगुरुमाई का नववर्ष-सन्देश हमारे अन्दर एक के बाद एक जागृति ला सकता है—वह

हमें भारत के ऋषि-मुनियों के महान प्रज्ञान का स्मरण कराता है। अनेकानेक प्राचीन शास्त्रों व दार्शनिक ग्रन्थों में यह प्रज्ञान लिपिबद्ध किया गया है।

मैंने सदा ही यह पाया है कि भारत के शास्त्र ज्ञान के गहन स्रोत हैं जो सिद्धयोग पथ पर मुझे हुए अनुभवों को स्पष्टता से समझने में और गुरुमाई जी की सिखावनियों के विषय में अपनी समझ को प्रकाशित करने में मेरी मदद करते हैं। और अब, अनेक वर्षों से, 'मुक्तबोध भारतीय प्राच्य विद्या शोध संस्थान' के अध्यक्ष तथा बोर्ड-प्रमुख होने की भूमिका में मुझे अपनी इस समझ को और भी विस्तृत करने का सौभाग्य मिला है कि यह प्रज्ञान-स्रोत कितना गहरा है। वर्ष १९९७ में गुरुमाई जी ने इस संस्थान की स्थापना की ताकि भारत के प्राचीन शास्त्रीय ग्रन्थों का परिरक्षण करने में सम्बल मिल सके। इस संस्थान के कार्य द्वारा, वर्तमान में तीन हज़ार से भी अधिक मूल पाण्डुलिपियों को डिजिटल रूप में संरक्षित किया गया है।

कठोपनिषद् में कहा गया है :

> कवयो वदन्ति
> ऋषिगण कहते हैं . . .
>
> उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत
> "उठो, जागो, महापुरुषों के पास जाओ और उनसे ज्ञान प्राप्त करो।"[२]

मेरे आत्मीय सह-साधको, जाग्रत रहना क्या है, इसके महत्त्व को हम समझें। और फिर, आइए हम *एक-दूसरे* को जागने के लिए प्रेरित करें। जब भी हम देखें कि हम या हमारे साथी सोने लगे हैं तो हम श्रीगुरु की सिखावनियों के—श्रीगुरुमाई के सन्देश के—आलोक से एक-दूसरे के पथ को प्रकाशित करें।

जिस सत्संग में गुरुमाई जी अपना नववर्ष-सन्देश प्रदान करती हैं, उस सत्संग को उन्होंने वर्ष २००८ में नाम दिया, 'मधुर सरप्राइज़'। गुरुमाई जी ने समझाया कि यह एक 'सरप्राइज़' है क्योंकि हमें उस वर्ष के लिए उनका सन्देश किसी भी रूप में प्राप्त हो सकता है।

और उनका सन्देश चाहे *जिस भी रूप* में हो, मैं सभी को इस बात का स्मरण कराना चाहता हूँ कि पूरे वर्ष के लिए सन्देश का महान उपहार यह है कि हमारे पास भरपूर समय होता है कि हम उसका अध्ययन कर सकें और उसमें निहित सिखावनियों को अभ्यास में उतार सकें; ताकि हम उसकी ओर उसी तरह बढ़ सकें जैसे हम किसी प्रिज़्म के पास पहुँचकर खोज करेंगे कि वह कितने भिन्न-भिन्न रूपों में अपने प्रकाश को हमारे जीवन में प्रतिबिम्बित व परावर्तित करता है।

मैं बता नहीं सकता कि वर्ष १९९६ के लिए गुरुमाई जी का सन्देश, *"उत्साह में झूमते चलो, प्रभु की महिमा गाते चलो",* कितनी ही बार, चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों में, मेरे लिए जीवन-रक्षक नौका सिद्ध हुआ है। और अभी-अभी जो बीता उस २०२२ के वर्ष में, गुरुमाई जी के सन्देश का बस एक शब्द, "सुनो," यही काफ़ी था जो मुझे याद दिलाता कि मैं ठहरूँ, एक गहरा श्वास लूँ और कोई भी क़दम उठाने से पहले यह समझ लूँ कि उस पल में क्या ज़रूरी है।

निस्सन्देह, हम सभी इस शब्द को जानते हैं, "सुनो।" मैंने पैंतीस वर्ष तक न्यूरोसाइन्टिस्ट [तंत्रिका वैज्ञानिक] और मेडिकल स्कूल के प्रोफ़ेसर के रूप में कार्य किया है। और निश्चित तौर पर मैंने वह सब कुछ किया जिससे मैं यह सुनिश्चित कर सकूँ कि मेरे विद्यार्थी मेरी बात को सुनें!

तथापि, जब मैं अपनी श्रीगुरु से यह शब्द सुनता हूँ, "सुनो," तो यह मेरे मन में एक अलग ही तरीक़े से प्रतिध्वनित होता है। यह श्रीगुरु के संकल्प के स्पन्द के साथ प्रतिध्वनित होता है जिसे मैंने श्रीगुरुमाई के वर्ष २०२२ के लिए सन्देश के रूप में ग्रहण किया है। यह उस स्तर पर स्पन्दित होता है जो मेरे मन के स्तर के परे है। यह मुझे अपने अन्दर उस स्थान में ले जाता है जहाँ मैं बिना किसी संशय के जानता हूँ, कि "मैं वह हूँ जो मैं हूँ।"

हम *बहुत* सौभाग्यशाली हैं कि हम सिद्धयोग पथ पर हैं। और जो नए साधक मधुर सरप्राइज़ में पहली बार भाग लेंगे व श्रीगुरुमाई का सन्देश ग्रहण करेंगे, जोकि आपके जीवन को रूपान्तरित कर देगा—उन सभी के लिए, मैं चाहता हूँ कि आप यह जानें कि आप एक पावन तीर्थयात्रा का शुभारम्भ करने जा रहे हैं। आप सिद्धयोग साधना का शुभारम्भ करने जा रहे हैं।

© २०२३ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।

---

[१] गुरुमाई चिद्विलासानन्द, हृदय की साधना [चित्शक्ति पब्लिकेशन्स, २०१२], पृ ९८।

[२] कठोपनिषद् पर आधारित १.३.१४; अंग्रेज़ी भाषान्तर © एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन।